तैयारी जीत की

वर्षायोग 2009, मेरठ (उत्तर प्रदेश) की विराट धर्मसभा में
पूज्य मुनि श्री द्वारा दिये गये मार्मिक प्रवचनों से संकलित

-:प्रवचनकार:-

एलाचार्य मुनि वसुनंदी

प्रकाशकः

डी०सी० मीडीया ''निकुंज'' टूण्डला
फिरोजाबाद उ०प्र०

कृतिः

तैयारी जीत की

शुभाशीषः

प.पू. राष्ट्रसंत, सिद्धांत चक्रवर्ती दि. जैनाचार्य
श्री १०८ विद्यानंद जी महाराज

प्रवचनकारः

एलाचार्य मुनि वसुनन्दी

सहयोगीः

संघस्थ सभी साधुवृंद एवं त्यागी व्रती

प्रथम संस्करणः **अक्टूबर २०१३**
३००० प्रतियाँ

मूल्यः **२० रुपये**

प्रकाशकः

डी.सी. मीडीया टूण्डला फिरोजाबाद उ.प्र.

मुद्रकः

जैन रत्न सचिन जैन ''निकुंज'' मो० 9058017645

प्राप्ति स्थानः

श्री सत्यार्थी मीडीया राष्ट्रीय कार्यालय
रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा
फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

श्री सत्यार्थी मीडीया पेश करते हैं महाविशेषांक

समझाया रवीन्दु न माना

गुरुदेव से सम्बंधित छायाचित्र, संस्मरण, भजन, कविता या साधना की विशेषता प्रदर्शित करता हुआ आलेख अवश्य प्रेषित करें ।

सभी परमभक्तों के लिए अंतिम अवसर

पूज्य श्री के विराट व्यक्ति व (गागर में सागर) को भरने का दुःसाहस

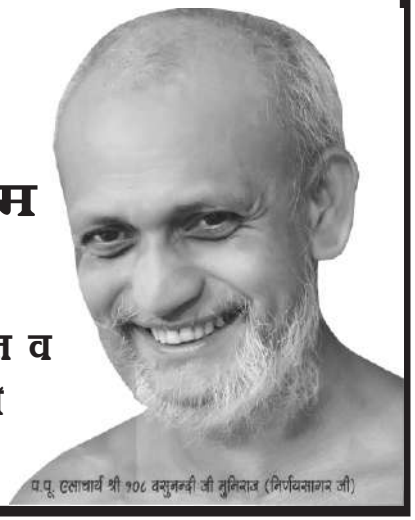

तैयारी जीत की

© जैन रत्न सविन जैन निकुंज
श्री सत्यार्थी मीडीया राष्ट्रीय कार्यालय
रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा
फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

मुद्रकः — डी.सी. मीडीया टूण्डला *मो0 9058017645

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री, आवरण पृष्ठ, चित्रादि के सम्बन्ध में प्रकाशक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को पूर्व में बिना लिखित अनुमति के मुद्रित करना या करवाना, कॉपीराइट नियमों का उल्लंघन होगा, जिसका सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का होगा और हर्जे – खर्चे के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे ।

रुपये 20/-

मीठे प्रवचन

एलाचार्य वसुनंदी मुनि
श्री सत्यार्थी मीडीया राष्ट्रीय कार्यालय
रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा
फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

टमाटर का पौधा एक सप्ताह में उत्तपन्न होकर एक माह बाद फल देना प्रारम्भ कर देता है, परन्तु आम का पौधा लगभग पाँच वर्ष बाद फल देना प्रारम्भ करता है, तुच्छ पुरूषार्थ का फल तुच्छ व शीघ्र मिल सकता है, किन्तु महान फल के वांछक को महान पुरूषार्थ करना आवश्यक है। झोंपड़ी तीन घंटे में बन सकती है किन्तु महल तीन शताब्दी में भी पूरा नहीं हो पाता, झोंपड़ी की अधिकतम उम्र २,४ माह ही है जबकि महल की आयु हजारों वर्ष है। इससे आप भी अपने जीवन के लक्ष्य और सफलता के बारे में विचार कर निश्चिंत हो जाओ । आप जितनी बड़ी सफलता चाहते हैं, उसके लिए उतना ही अधिक समय व परिश्रम अपेक्षित है। क्या आप नहीं जानते शक्कर के चार कणों से एक चम्मच पानी ही मीठा हो सकता है पूरी टंकी या ड्रम नहीं, उसी प्रकार तुम्हारे अल्प पुण्य कार्य से क्षण भर ही सुख मिल सकता है शाश्वत सुख नहीं, शाश्वत सुख पाने हेतु कठिन तप भी अनिवार्य है।

एलाचार्य मुनि श्री वसुनंदी जी
की बहुचर्चित कृति 'मीठे प्रवचन'से

तैयारी जीत की

धर्म स्नेही, सत् श्रद्धालु श्री जिनालय के पवित्रतम प्रांगण में विराजमान आप सभी पुण्यात्मा महानुभाव ! आज संसारी प्राणी का जीवन तमाशा वृन्त हैं अज्ञान की घोर निशा उसे अपने स्वरूप से परिचय नहीं होने देती। वर्तमान काल में केवलज्ञान रूपी सूर्य अस्त हो चुका है यत्र तत्र कहीं जुगनू की तरह से प्रकाश करने वाले सम्यग्दृष्टि, श्रुतज्ञानी श्रमण और श्रावक के दर्शन बड़ी दुर्लभता से प्राप्त हो पाते हैं। ऐसा कहीं हजारो और लाखों व्यक्तियों के बीच में कोई एक विरला व्यक्ति सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा मिल सकता है। आ० शुभचन्द्र स्वामी जी ने लिखा "सम्यग्दृष्टियों की संख्या कलिकाल में अत्यल्प है।" आ० गुणभद्र स्वामी जी ने आत्मानुशासन में लिखा है, इस कलिकाल में तत्त्व की चर्चा करने वाले सुनने वाले, सुनाने वाले अत्यंत अल्प हैं। वर्तमान काल में विषयों का पोषण करने वाले, पाप मार्ग की प्रेरणा देने वाले और मिथ्यात्व में उलझाने वाले व्यक्ति सर्वत्र सुलभ हैं। महानुभाव ! पतन की ओर गतिशील होना बहुत सहज है परन्तु उत्थान की ओर कदमों को गतिशील करना अपने आप में सबसे बड़ी साधना है उत्थान की ओर कदम ऐसे ही नहीं जाते,

जीवन बनाने के लिए पूरा जीवन समर्पण करना पड़ता है और जीवन बिगाड़ने के लिए चार क्षण पर्याप्त हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि हम जीवन को जीवन मान जी ही नहीं पाते। अपनी आत्मा से पूछना कि वास्तव में हम जीवन जी रहे हैं या जीवन को ढो रहे हैं। जीवन जीना एक अलग बात है और जीवन ढोना एक अलग बात है। आहार, भय, मैथुन और परिग्रह इन चारों संज्ञाओं में उलझा हुआ व्यक्ति वास्तव में अपना जीवन नही जी रहा है जो इससे उठकर आगे पहुँच जाता है वही जीवन जीने का सही आनंद ले पाता है। भगवान महावीर स्वामी का दिव्य संदेश चार शब्दों का शायद सभी को याद होगा सभी के कंठ में और मस्तिष्क में वह लिखा हुआ होगा परंतु अन्तस्थल तक वह नहीं उतर सका "जियो और जीने दो" यदि ये चार शब्द हमारी आत्मा में आ जाते तो हमारी आत्मा निः संदेह परमात्मा के साँचे में ढल गई होती। महानुभाव ! जियो और जीने दो भगवान महावीर स्वामी का दिव्य संदेश "जियो" से प्रारम्भ हो रहा है। पहले जीने की कला सीखें, हमारा जीवन अभिशाप नहीं वरदानों की सौगात है। यह रोने के लिए नहीं, यह तो हँसने और हँसाने के लिए है। यह बिलबिलाने के लिए नहीं, यह तो खिलखिलाने के लिए है। किसी से पूछो भैया कैसा चल रहा है तो कहते हैं कट रही है, ठीक है जैसे उसकी श्वाँस नहीं निकल रही हो बड़ी उदासी के साथ उत्तर देगा कट रही है अरे जब कहना है तो अच्छे उत्साह के साथ कहो बहुत सुंदर, मेरा सौभाग्य, मेरा पुण्य का उदय, मैं श्री जी के चरणों में पहुँच जाता हूँ, गुरूदेव के चरणों में पहुँच जाता हूँ, जिनवाणी के दो शब्द सुनता हूँ मैंने कितनी साधना की होगी कि आज मुझे फल मिल गया। तो महानुभाव ! जीवन कोई काटने की चीज नहीं है काटना तो हिंसा की भाषा है, जीने की भाषा कैसे आ गई अरे जीवन क्या मेरा शत्रु है मैं जीवन को क्यों काटूँ। जीवन को पूर्ण आनंद के साथ बड़ी खुशी के साथ जीना है। अरे तुम जीवन को क्या काटोगे, काल रूपी आरा आपके जीवन को वैसे ही काट रहा है, क्षण क्षण

में आपका जीवन नष्ट हो रहा है। एक समय एक व्यक्ति जंगल में प्रातः काल से ही पहुँच जाता है और वृक्ष की शाखा को काटता है। एक व्यक्ति वहाँ से निकल कर जाता है, खटपट की आवाज आई तो उसने देखा कोई व्यक्ति शाखा काट रहा है तो वह व्यक्ति बोला ठहरो, तुम क्या कर रहे हो बोला देखते नहीं शाखा काट रहा हूँ। व्यक्ति बोला वह तो ठीक है। पर तुम जिस शाखा पर बैठै हो, उसी को काट रहे हो, कटेगी तो तुम जमीन पर गिर जाओगे। उसने कहा महाशय लगता है आप बड़े दयालु हैं किंतु मैंने आपसे कोई सलाह तो नही माँगी, तो सलाह देने की क्या आवश्यकता पड़ गई। व्यक्ति बोला ठीक है दुर्बुद्धि तो मैं हूँ जो तुझे सलाह देने बैठ गया। वह व्यक्ति जैसे ही आगे बड़ा वह शाखा टूटी और वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा, चोट आई, दौड़कर के उस व्यक्ति के पास पहुँच कर पैर पकड़ लिये कहा भैया आपने जो कहा वह ठीक था मैंने तो अभी ये जाना ही नहीं था कि जिस शाखा पर बैठा हूँ उसे ही काटूँगा तो निःसंदेह मेरा अधः पतन है। महानुभाव शायद सभी संसारी प्राणी अधिकांशतः अपनी जीवन रूपी शाखा को काटते चले जा रहे हैं, नहीं मालूम कि जीवन रूपी शाखा को काट करके पतन होगा तो कहाँ गिरेंगे? मुश्किल, दुर्लभ और कहें तो असंभव जो अपने जीवन को वरदान मानकर जी रहे हैं जिनका जीवन दिव्यालोक से भरा हुआ है, जिसके जीवन में संयम का सौरभ है ऐसे व्यक्ति आनंद के साथ अपना जीवन व्यतीत करते हैं और उनके संपर्क में जो भी आ जाता है उनका जीवन भी पावन और पवित्र बन जाता है। महानुभाव जीवन को हमें काटना नहीं है, जीवन को हमें छाँटना नहीं है, जीवन हमें मिला है तो बस हम बाँटना सीखें। जो बाँटोगे वही मिलेगा यदि घृणा बाँटोगे तो घृणा मिलेगी, सुख- शांति बाँटोगे तो सुख शांति मिलेगाी प्रेम बाँटोगे तो प्रेम मिलेगा अब अपनी समीक्षा स्वयं करके देख लो कि तुम्हे क्या बाँटना है। क्या चाहिये अब यह नहीं सोचना कि हम तो चाहते हैं प्रेम बाँटे परन्तु प्रेम है कहाँ तो प्रेम, वह तो अंतर आत्मा से जब आपके परिणाम निर्मल होंगे तब निःसंदेह

प्रेम की धारा फूट पड़ेगी, जब आपके अहंकार की चट्टान टूट जायेगी तो पुनः प्रेम का झरना फूट पड़ेगा। जब तक आपके चित्त पर आपके हृदय में अहंकार की मोटी चट्टान लगी होगी तब तक प्रेम का निर्मल नीर निःसृत नहीं हो सकेगा। तो महानुभाव! अभी आपका प्रेम बड़ा संकीर्ण है। संकीर्ण प्रेम, प्रेम नहीं कीचड़ कहलाता है जो प्रेम विशाल होता है उदार होता है, निःसीम होता है आत्मा के प्रति होता है वह प्रेम निः संदेह निर्मल जल की तरह से होता है, आत्मा को भी पवित्र करने वाला होता है। आपका प्रेम अभी एक, दो और चार के प्रति है,या हो सकता है आपका प्रेम हजार के प्रति हो गया हो फिर भी वह आपका प्रेम सीमित है। अपने प्रेम का विस्तार करके देखो, ज्यों – ज्यों प्रेम का विस्तार होगा तुम्हारी आत्मा उन्मुक्त होती चली जायेगी। एक से प्रेम नहीं किया जाता एक से जो किया जाता है वह मोह किया जाता है। मोह प्रेम में थोड़ा अंतर है, मोह वह कहलाता है

पर को अपना मान बैठा, निज को पहचाना नहीं।
यह भूल है आपकी, जो आपको जाना नहीं।।
आपके जाने बिना, परमात्म पद पाया नहीं।
परमात्म पद पाकर फिर संसार में आना नहीं।।

तो प्रेम वह कहलाता है जहां दूसरे की आत्मा के प्रति आपका स्नेह भाव है उसकी आत्मा भी मेरी जैसी बने और मोह वह कहलाता है जो दूसरे के शरीर के प्रति राग होता है। प्रेम तो निर्मल धारा है, प्रेम निः सीम होना चाहिए, अनंत होना चाहिए, प्राणी मात्र के प्रति होना चाहिए। इसे दूसरे शब्दों में मैत्री भावना भी कह सकते हैं। महानुभाव! भगवान महावीर स्वामी के दिव्य संदेश में उन्होंने चार शब्दों में माना चारों अनुयोगों का सार भर दिया वे चार शब्द हमारे जीवन के आयाम बन सकते हैं अरे जितनी जिन्दगी है उसको तो शान से, आनंद से जियो। क्यों घबराते हो? अरे मौत आये तब मरो तब भी ठीक है, कुछ लोग तो मौत के आने से पहले ही मर

जाते हैं, ये कौन सी समझदारी रही, कोई आंधी- तूफान आता तब दीपक बुझ जाता तो चलो मान भी लेते किंतु आंधी तूफान का नाम सुन करके बुझ जाये ये तो कोई समझदारी नहीं कहलायी। अरे दीप तो वह कहलाता है जो आंधी तूफानों में जलता हुआ मिल जाये। जो पुरुषार्थी व्यक्ति होता है, यशस्वी होता है, तेजस्वी होता है वह व्यक्ति संघर्ष की अग्नि में तप करके कुंदन सा निखर जाता है और अपने परिचय में दो पंक्ति कहता है

"आंधी और तूफानों के बीच में जो जलता हुआ मिल जायेगा।
उस दीप से तुम पूछ लेना मेरा पता मिल जायेगा।।"

महानुभाव ! जो व्यक्ति जीवन में कुछ हासिल करना चाहते हैं कुछ प्राप्त करना चाहते हैं वे निः संदेह संघर्षो की अग्नि में तपने के लिए तत्पर रहते हैं। जो संघर्षों की अग्नि से जी चुराये जो दाना खेत में जाने के पहले से जी चुराये कि मैं भूमि में समर्पित नहीं होऊँगा, जो दाना धूप को देख करके कुम्हला जाये, वह क्या पौधा बन पायेगा? क्या पुष्प और फल दे पायेगा? ऐसे ही जो जीवन में जीना चाहता है तो दुःखों को, आपत्तियों को, संकटों को हटा करके, मिटा करके नहीं, उनसे डर करके नहीं, उनसे मुकाबला करना है तो डट करके करना है, डर करके नहीं डट करके जीना है।

उस पथिक! की क्या परीक्षा, कि पथ में शूल न हो।
उस नाविक! की क्या परीक्षा, कि धारा प्रतिकूल न हो।।

महानुभाव! कुछ व्यक्ति ऐसा जीवन जीते हैं कि उनका जीवन दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है, वे मरने के बाद भी याद किये जाते हैं।

जीवितोऽपि मृतो ज्ञेया, भव्या धर्म विवर्जिताः।
मृतोऽपि जीविता ज्ञेया, ये भव्या धर्म संयुताः।।

जो व्यक्ति धर्म के साथ जीता है वह मरने के उपरांत भी अमर ही माना जाता है, जीवित माना जाता है और जो व्यक्ति "धर्म विवर्जिता" धर्म से रहित होकर जीते हैं "जीवितोऽपि मृतो ज्ञेया" वे जीवित होने पर भी मृत के समान हैं। आपका जीवन जब तक धर्म की डोरी से जुड़ा हुआ है, तब तक जीवन रूपी पतंग बहुत ऊँची जा सकती है,आकाश की ऊँचाईयों को छू सकती है। किंतु धर्म की डोरी से जीवन रूपी पतंग छूट जाए तो उस जीवन रूपी पतंग का पतन भी हो सकता है। तो महानुभाव! जीवन में चाहे कैसी भी परिस्थिति आ जाये, हमारे मुख से सपने में भी ये शब्द ना निकले कि इससे अच्छा तो हम मर जायें। तो आज संकल्प लें कि कभी भी जीवन में आत्म हत्या जैसा भाव मन में भी नहीं लायेगें, यह महापाप का कारण है। और दूसरी बात किसी दूसरे की हत्या करने का भाव भी नहीं लायेंगे। जो व्यक्ति आत्म हत्या करने का भाव नहीं लायेगा उससे उम्मीद की जा सकती है कि पर की हत्या करने का भाव मन में न लायें किंतु जो अपनी हत्या करने को उतारू हो सकता है, उसका विश्वास कैसे किया जाये? महानुभाव! इस अमूल्य जीवन को यूँ ही नहीं बिताना है, time pass नहीं करना है और क्या समय किसी के कहने से pass हो जायेगा, रुक जायेगा। समय, वह तो स्वतंत्र द्रव्य है, स्वतंत्र परिणमन है। किंतु समय को अवसर वादी व्यक्ति अपने वश में रखने का साहस रखते हैं, कहते हैं समय तो हमारे हाथ का है।

हौंसले जिनके बुलन्द होते हैं
अच्छे सपने भी उनकी मुट्ठी में बंद होते हैं।
वक्त भी आकर के स्वयं करता है उनकी गुलामी
जो स्वयं खुद वक्त के पाबंद होते हैं।।

तो अपने जीवन के प्रति आस्था से भर जाओ, आत्म विश्वास रखो अपनी क्षमता पर, अपनी योग्यता पर, अपने स्वभाव पर, अपने धर्म पर निः संदेह तुम उन्हें उपलब्ध कर जाओगे। जब तक अपनी आत्मा के प्रति आस्था, विश्वास, आत्म विश्वास नहीं होता तब तक अपना जीवन मानचित्र का जीवन है, कल्पना का जीवन है। मानचित्र की नदी कभी प्यास नहीं बुझा सकती, मानचित्र के वृक्ष छाया प्रदान नहीं कर सकते। मानचित्र तो मानचित्र है उसको चित्र मान करके चलना पड़ेगा उसको चरित्र, सचित्र या जीवंत नहीं मान सकते। महानुभाव! जीवन को जीवंत बनाने के लिए आवश्यक है संक्षिप्त जीवन पर विश्वास करना। अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी पर तीर्थंकरों पर, पंच परमेष्ठियों पर विश्वास करना आसान है। किंतु अपनी आत्मा पर विश्वास करना सबसे कठिन काम है। विश्वास करो कि आत्मा भी परमात्मा बन सकती है, पंच परमेष्ठी की श्रेणी में आ सकती है। मेरी आत्मा में वही शक्ति है जो श्री महावीर, पार्श्वनाथ जैसी आत्माओं में थी। महानुभाव ! एक व्यक्ति में इतनी शक्ति है कि वह जो चाहे प्राप्त कर सकता है।

ध्येय पाने को स्वयं पैर बढ़ाना होगा।
पथ के पत्थर को स्वयं दूर हटाना होगा।।
दूसरा कौन तुझे राह सुझाएगा?
अपने ही मन का दीप तुझे जलाना होगा।।

आवश्यकता है तो सकारात्मक सोच के साथ जीने की, उत्साह, उमंग और उल्लास के साथ जीने की ये कला, विश्व गुरु कहे जाने वाले भारत की धरा पर उत्पन्न ऋषियों, मुनियों, यतियों, संतो, भगवंतो ने हमें सिखायी। जीओ तो ऐसा जीओ की तुम्हारे जीने से दूसरे का जीवन संभल जाए। तुम्हारे ज्ञान के सूर्य से दूसरे का हृदय कमल खिल जाए। दूसरों कि आँख पोछ करके जियो। जिओ तो ऐसे जियो कि तुम्हें देख करके दूसरों को अपनी मंजिल मिल जाये। तुम्हारे कदम उनके लिए आदर्श बन जाऐं। तुम यदि मंजिल की

ओर कदम बढ़ाओगे तो हजारों कदम उस ओर बढ़ जायेंगे, तुम मंजिल को पाओगे लाखो दृष्टियाँ मंजिल की ओर पहुँच जायेंगी, तुम मंजिल का लाभ प्राप्त करोगे, करोड़ों अरबों, खरबों नयन तुम्हारे प्रति लग जायेंगे। लेकिन आज तक तुमने क्या किया? सामने वाले की गल्तियाँ गिनीं, सामने वाले के दोष गिने, सामने वाले की बुराई या निंदा की,उसके अवगुण देखे। अपनी बुराई अपने अवगुणों पर कभी दृष्टि नहीं गई। किंतु एक बात ध्यान रख लेते कि यदि सामने वाले की एक गलती गिनाते तो तीन उंगली तो स्वयं की ओर रहती । यदि सामने वाले की एक अच्छाई गिनाते तो एक अंगुली उसकी ओर होती तो तीन अच्छाई तुम्हारे पास Automatic आ जातीं किंतु प्रायः करके मिथ्यादृष्टि की दृष्टि ऐसी होती है, उसकी आँखो पर ऐसा चश्मा लगा होता है कि सामने वाले की अच्छाई तो दिखती ही नहीं दिखती हैं तो सिर्फ बुराई।

अच्छाईयाँ देख ले तू सारे जहान की।
बुराईयों का कहीं कोई अंत नहीं हैं।।

महानुभाव ! पुरुदेव चंपू में आचार्य महाराज ने अनुवीची भाषण कला को झरने की उपमा दी। जिस प्रकार झरना पत्थरों को काटकर अपना स्थान बना लेता है उसी प्रकार व्यक्ति की हित मित प्रिय वाणी सामने वाले के हृदय में स्थान बना लेती है। तो केवल वाणी ही नहीं अपितु जीवन जीने का ढंग ऐसा हो, प्रत्येक क्रिया – चर्या ऐसी हो जो सामने वाले के हृदय में अमिट छाप छोड़ दे। हमें चार्वाक के सिद्धांतो पर चलकर नहीं जीना। चार्वाक कहता है

यावज्जीवेत् सुखं जीवेन्नास्ति मृत्युरगोचरः।
भस्मीभूतस्य शान्तस्य पुनरागमनं कुतः।।
यावत् जीवं सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य, पुन रागमनः कुतः ।।

जब तक जिओ खूब घी पियो। क्योंकि संसार में कोई भी मृत्यु का अविषय नहीं हैं भस्म रूप हुई शांत देह का पुनरागमन कैसे हो सकता है। परंतु भगवान महावीर स्वामी कहते हैं जीना है तो धर्म का अमृत पीकर जिओ, चेतना के साथ होश व जोश से जियो। धर्म के कोश के साथ जीओ। जो व्यक्ति जीता है वही जीता (जीतता) है। यह संसार तो रंगमंच है प्रतियोगिता का। इस संसार की प्रतियोगिता के रंगमंच पर आकर के सभी अपना - अपना करतब दिखाते हैं कुछ उसमें भाग लेते है और कुछ उसमें से भाग लेते हैं।किंतु जो उसमें भाग लेते है, कर्मों के साथ द्वंद करते हैं, युद्ध करते हैं, उसमें जो विजयी हो जाता है तो निः संदेह जीवन का पुरस्कार उसे मिलता है और जो हार जाता है।वह मारा जाता है वह हारा कहलाता है। इसीलिए मरने की और मारने की बात तो करना ही नहीं यह बात तो कोई शैतान दीर्घ संसारी, मिथ्यादृष्टि ही कर सकता है। महानुभाव ! संकल्प करें जीने का, जियेंगे, श्रद्धा, भक्ति, संयम, ज्ञान इत्यादि की अग्नि परीक्षा में से गुजर करके जियेंगे, सुख और शांति के कोश में रह करके जियेंगे और सबको अपना बना करके तथा सबका अपना बन करके जियेंगे। तो जीवन सदैव अपनी शर्तों के सहारे नहीं जिया जा सकता। आप चाहें कि हमारे शर्तों के सहारे हमारी जिंदगी पार हो जाए, तो असंभव है। यहाँ तक की तीर्थंकरो को भी सभी अनुकूलताऐं नहीं मिलती,यदि मिलती तो अंतर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त करके केवली क्यों नहीं बन जाते । कभी किसी के पुण्य का तीव्र उदय होता है तो अनुकूलता बन जाती है। जब किसी के पाप का उदय होता है तो चाहे वह तीर्थंकर ही क्यों न हो फिर भी उसे प्रतिकूलता का फल तो भोगना ही पड़ता है।

पुण्येन लभ्यंते सौख्यमपुण्येन च दुःखिता ।
कर्मणामुचितं लोक सर्व कलमुपाश्नुते ।।

पुण्य से सौख्य की प्राप्ति होती है और बिना पुण्य के (पाप से) दुःख की

प्राप्ति होती है। सभी प्राणी कर्मों के अनुरूप ही फल प्राप्त करते हैं। व्यक्ति जैसे कर्म करता है उसको वैसा ही फल भोगना पड़ता है।

को का को दुख देत है, देत कर्म झकझोर ।
उलझत सुलझत आप ही, ध्वजा पवन के जोर।।

निमित्त चाहे जो बने पर मूल में तो वह अपना कर्मफल ही भोगता हैं।

वैद्यो वदंति कफ, पित्त मरुद् विकारान्।
ज्योतिर्विदो ग्रहगणं परिकल्पयंति ।
भूतोयन्हष्टि रिति भूत विदो वदंति ।
प्राचीन कर्मबलवान्मुनयो वदंति ।।

वैद्य वात पित्त कफ का विकार बताकर दवा देते हैं, ज्योतिषी ग्रहों की बाधा बताते हैं रत्न उपचारादि बता देते हैं, भूत बाधा दूर करने वाला तांत्रिक झाड़ फूँक कर देता है किंतु मुनि कहते हैं - " तुम्हारे प्राचीन पूर्व में किए हुए कर्मों का फल है और यही तो सत्य है।

अपने जीवन का हर प्राणी, आप स्वयं निर्माता है।
जैसा करता वैसा भरता, कोई न सुख दुखदाता है।।

कर्म तो करनी की परछाई हैं। किसी ने कहा भी हैं-

Every man is the architect of his own fortune

तो महानुभाव ! जीना है अदम्य साहस के साथ जीना है। पाप कर्म के कैसे भी तीव्र उदय में घबराना नहीं है।

विपदा को विपदा नहीं, माने जब नर आप।
विपदा में पड़ लौटती, विपदाएँ तब आप।

संसार में जितने भी पदार्थ हैं। प्रत्येक पदार्थ का अपना अलग -२ स्वभाव होता है, अलग-२ प्रकृति होती है, अलग-२ नियति होती है जैसे अग्नि का स्वभाव उष्णता, जल का स्वभाव शीतलता। ऐसे ही हमारे मनुष्य भव का हमारे संसारी जीवन का भी एक स्वभाव है, वह स्वभाव है पुण्य और पाप के फलों को भोगना। चाहे उन फलों को हँस करके भोगें, चाहे फलों को रो ककरके भोगें, भोगना हमें ही है, दूसरा भोगने वाला नहीं है क्योंकि हमने ही तो खेत में बीज बोया है, हमने जो बोया है उसे करने वाले हम ही हैं, हमने अपने जीवन की डायरी पर जो लिखा है उसे पढ़ने वाले हम ही हैं। हमने जिस दुकान से व्यापार करते हुए उधार माल खरीदा है उसका चुकता हमें ही करना है, हमने बैंक से लोन लिया है तो चुकाने वाले हम हैं।

स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते ।
स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्मात् विमुच्यते ।।

महानुभाव ! आवश्यकता है हम कंटकाकीर्ण मार्ग में सुखी होकर के चलें। सदैव मार्ग पुण्यों से आवृत्त नहीं मिलता, सदैव मार्ग शीतल छाँव से परिपूर्ण नहीं मिलता, सदैव मार्ग हमारे अनुकूल नहीं मिलता। यदि हमें मंजिल को प्राप्त करने की ललक है तीव्र आकांक्षा हैं तो हमें दोनो शर्तों को स्वीकार करना पड़ेगा। पुण्य तृप्ति से युक्त, शीतल छाँव से परिपूर्ण यदि मार्ग मिल जाये तो हम थकान निकालने के लिए बैठें नहीं, हम उसे देखकर फूले नहीं और कही हमें कंक सहित मार्ग मिल जाये तो उसे देखकर कूले नहीं, दोनो परिस्थितियों में अपने लक्ष्य को भूलें नहीं। तभी तो मंजिल की प्राप्ति संभव है। प्रतिकूलताओं में घबराने की जरूरत नहीं है। संघर्षो का सामना तो डट के

करना है। जिसकी जिंदगी में जितने ज्यादा संघर्ष आते हैं उसका जीवन उतना ऊँचाइयों को प्राप्त होता चला जाता हैं। स्वर्ण को जितना तपाया जाता है वह उतना निखरता चला जाता हैं सीता, चंदना, सुरसंदरी, अनंतमती, मदनलेखा इन्होंने अपने जीवन में बहुत दुःख देखे लेकिन उनसे घबराये नहीं, उनका सामना किया तो जीवन निखरकर कुंदन हो गया। चारित्र चक्रवर्ती आ० शांति सागर जी महाराज जिन्होंने अनेक संघर्षो का सामना कर पुनः मुनि धर्म का प्रवर्तन कर दिया। ए.पी.जे अब्दुल कलाम, जमशेद टाटा, धीरू भाई अंबानी, अब्राहम लिंकन, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जिन्होंने संकटों का सामना कर अपना नाम इतिहास में हमेशा के लिए अमर कर दिया। किसी कवि ने भजन की पंक्तियों में लिखा है -

दुःख संकट में जो सिहर उठे उनको इतिहास न जान सका।
दुःख में जो कर्मठ धीर रहे,उनको ही जग पहचान सका।।

हमें जीना है, संकटों का, संघर्षों का सामना करके जीना है। अरे ! तो क्या हुआ अगर पहली बार में सफलता नहीं मिली।

गिरते हैं घुड़सवारमैदान ए. जंग में।
वो शख्स क्या गिरे,जो घुटनों चले।।

हार - जीत का फैसला तो बाद मे होगा पहले लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश तो करो। लक्ष्य की ओर कदम तो बढ़ाओ।

Journey of hundred miles starts with one step

महानुभाव! जीवन, सकारात्मक जीवन जीना है, जीवंत जीवन जीना है। जीवन प्रारंभ होता है जीवन का बोध होने पर, जब तक व्यक्ति को अपने जीवन का बोध नहीं होता तब तक उसका जीवन, जीवंत जीवन नहीं कहलाता। जिसे अपने अस्तित्व का भान हो जाए, बोध हो जाए, अपने को जान सके, पहचान सके तब तो उसका जीवन जीवंत जीवन है। यदि कोई अमीर, भीख माँग रहा हो तो उसे अमीर कौन कहेगा, सब भिक्षु ही कहेंगे क्योंकि उसे अपनी अमीरी,धन- दौलत का भान ही नहीं है। जिसे अपने पंखों का ज्ञान नहीं, पंखों की उड़ान पर भरोसा नहीं उसे हम नभचारी कैसे कहें? क्यों कि वह तो पृथ्वी पर चल रहा हैं। नभचारी तो वह तभी कहलायेगा जब वह नभ में विचरण करे, उसे भी बोध हो कि मेरे पंखो में वह जान है कि सारा संसार, सारा जहान मेरे लिए एक समान है, कहीं भी मैं जा सकता हूँ, उड़ सकता हूँ। जब तक जीवन का बोध नही हैं वह जीवन मृत तुल्य है। जीवन को जीवंत और सुखी बनाने के लिए एक ही आधार है। जो प्राणी मात्र के लिए आधार आज भी है पहले भी था और भविष्य में भी रहेगा ।जीवन का केवल एक ही आधार है और वह आधार है धर्म।बिना धर्म के कोई भी व्यक्ति अपना जीवन सुखी नहीं बना सकता ।व्यक्ति कितना भी प्रयास कर ले दो अंकों में सौ नहीं लिख सकता ।सौ लिखना है तो तीन अंक ही होना चाहिए । तीसरा अंक जीवंत जीवन हैं । दो अंक तो जीवन मृत्यु के हैं। ये दो अंक तो संसार के सभी प्राणियों के पास हैं किंतु यदि कहीं कठिनाई आती है तो पुनः जीवंत जीवन को जीने की कठिनाई है। जीवंत जीवन वही जी सकता है जिसने आत्म बोध प्राप्त कर लिया है और दोनों अंको से पार हो करके तीसरे अंक पर पहुँच गया हो दोनो अंको के बीच में निवास करने वाला नृत्य करने वाला, यात्रा करने वाला, दोनो अंको को लक्ष्य बना करके अपनी मंजिल को पाने वाला व्यक्ति सौ के अंक को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। जैसे व्यक्ति एक तन और धन के स्तर पर जीता है वह कभी मन और चेतन के स्तर पर नहीं पहुँच पाता। तन और धन के स्तर से जब ऊँचा उठता है तब मन के स्तर पर पहुँचता है और उसे भी पार कर जाता है तो

चेतना के धरातल पर उसका प्रवेश हो जाता हैं। महानुभाव! दुःख रूपी मेघों के जल से बचाने वाला यदि कोई छाता है तो सिर्फ धर्म है। ऐसे धर्म को हमें धारण करना है। मैं सिर्फ धर्मात्मा हूँ इतना कहने से कोई व्यक्ति धर्मात्मा नहीं बनेगा, धर्मात्मा का आशय होता है अपनी आत्मा में धर्म को पैदा कर लेना और फिर आत्मा और धर्म दो नहीं एक ही दिखाई दे। यदि आत्मा और धर्म अलग -अलग हैं तो हम कभी भी धर्मात्मा नहीं कहला सकेंगे। धर्मात्मा वही है जिसकी आत्मा में धर्म स्वभाव रूप से विद्यमान है। यदि धर्म स्वभाव रूप से प्रगट हो जाए तो निः संदेह हमारा जीवन शांतमय जीवन बन सकता है। किंतु हम धार्मिक बनना चाहते हैं। धार्मिक बनना बड़ा सहज और सरल है और धर्मात्मा बनना थोड़ा कठिन है। धार्मिक और धर्मात्मा में क्या अंतर है? धार्मिक व्यक्ति वह है जिसके पास प्रमाण पत्र है, कहीं सज्जनों की सभा में जाकर के भी प्रमाणित कर सके कि मैं धार्मिक हूँ। जो बाहर से तो धर्म की क्रियाएँ करता है किंतु अंदर से धर्म की प्रवृत्ति उसकी नहीं होती तो हम केवल धार्मिक बनने का खिताब लेने के लिए आतुर न हों कि हमें सम्मान मिले, प्रतिष्ठा बढ़े, हम भी गर्व के साथ, विजय उन्माद के साथ प्रमाणित कर सकें कि हम धार्मिक हैं। पर इतने से काम नहीं चलेगा जब तुम अपनी आत्मा की कचहरी में अपनी आत्मा को, आत्मा के लिए, आत्मा के द्वारा आत्मा से साबित न कर दो। प्रसन्न मुद्रा, सहज मुस्कान, वीतराग भाव, जो प्रतिदिन पूजादि शुभ कार्यों में संलग्न रहे यह धर्मात्मा की पहचान है। धर्मात्मा केवल धर्मस्थलों पर धर्म नहीं करता बल्कि वह जहाँ रहता है धर्म सहित रहता है। जो करता है धर्म सहित करता है क्यों कि धर्मात्मा धर्म को ओढ़ता नहीं, धारण करता है।अपना निजी स्वभाव बना लेता है। गणेश प्रसाद वर्णी के विषय में आता है कि वे एक बार ट्रेन से यात्रा कर रहे थे। किंतु एक स्थान पर उनका टिकट पूरा हो गया किंतु उन्हें और आगे जाना था व उनके पास पैसे नहीं थे तब वे पास रास्ते में उतरे जहाँ बहुत से मजदूर मजदूरी कर रहे थे वहाँ मजदूरी कर आगे का टिकट खरीदा। गोपाल दास बरैया ने हमेशा की तरह अपने बेटे का १/२ टिकट लिया किंतु कुछ

देर बाद उन्हें याद आया कि वह आज ही १२ वर्ष का पूरा हुआ है तो उन्होनें पूरा टिकट लिया। महानुभाव! धर्मात्मा किसी से कुछ नहीं चाहता कहता है मेरे पास सब कुछ है। वह कहता है जब तक मुझे अपने पास विद्यमान वस्तु का, गुणों का, स्वभाव का बोध नही है तभी तक मैं सामने वाले से चाह रहा हूँ। जब अपने आप का बोध हो जायेगा तो सामने वाले से चाहने की इच्छा नष्ट हो जायेगी।फिर वह मुमुक्षु बन जायेगा। मुमुक्षु का आशय होता है जिसकी समस्त इच्छायें मर गई हों केवल एक मुक्त रहने की इच्छा, जीवित रह गई हो। संसार की अनंत इच्छाऐं अंधकार की तरह से हैं और मोक्ष की इच्छा सूर्य के प्रकाश की तरह से है। जिस प्रकार सूर्योदय होते ही अंधकार नष्ट हो जाता है। वैसे ही मोक्ष की इच्छा उत्पन्न होते ही संसार की अनंत इच्छाएँ नष्ट हो जाती हैं। क्या कभी कोई व्यक्ति दो नाव में पैर रख करके विपरीत दिशा में चल सकता है? नहीं। एक साथ दो विपरीत लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती।

दो मुख राही चले न पंथा, दो मुख सुई सिले न कंथा।
दोई काज न होय सयाने, विषय भोग और मोक्ष हु जाने।।

धर्मस्नेही बंधुओं जीवन को धर्ममय बनाकर जीना है। ऐसा जीवन जीना है जो धन्यता से भर जाये, कृतज्ञता से भर जाये, इस जीवन के लिए दो शब्द कहने के लिए दुनिया के व्यक्ति संकल्प कर लें मैं भी ऐसा ही जीवन जिऊँगा, जीवन वास्तव में धन्य जीवन कहलाता है प्रशंसनीय कहलाता है, सार्थक जीवन कहलाता है।और साधुओं के पास देने के लिए कुछ भी नहीं है, अरे हमारे पास देने के लिए रखा भी क्या है हम तो फकीर हैं। हाँ अगर कोई चाहे तो जीने की अदा ले जाये। जीवन सही रूप में कैसे जिया जाता है। जीने

की अदा सीखनी है, अंदाज सीखना है तो संत से सीखिये। दिगंबर साधुओं से सीखिए कि वह अनेक बेचैनियो के बीच में चैन से जीता है, चैन की नींद सोता है अशांतियों को भुला कर शांति से जीता है, दुःखों को भुलाकर सुख का अनुभव करता है,यदि संत से सीखना है तो जीने की कला सीखो आप आत्मा को परमात्मा से जोड़ दें। इन्ही मंगल भावनाओं के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। (आज बस इतना ही)

वसुनंदी उवाच

१. कभी – कभी आपकी (महापुरुषों की) एक मुस्कान भी अपने भक्तों व अधीनस्थों के लिए मरुस्थल नीर प्रवाह की तरह लाभदायक सिद्ध हो जाती है ।

२. आत्मा चिर विश्रान्ति, सुख अनुभूति, प्रभु भक्ति व अध्यात्म दृष्टि, तत्त्व ज्ञान व आत्म लीनता में ही है ।

३. प्रतिकूलताओं को सहने की शक्ति प्रभु भक्ति से ही मिलती है ।

४. यदि आप विषय – कषायों से रहित होकर एक क्षण भी आत्मानंद की अनुभूति करते हैं तो इससे अगले क्षण भी आत्मानंद की संभावना बन जाती है ।

५. प्रथम क्षण की स्वात्मानंद की सुखद अनुभूति द्वितीय क्षण की सुखद अनुभूति का बीज बन जाती है ।

६. बाह्य शत्रुओं को जीतने वाला वीर हो सकता है । किन्तु अंतरंग शत्रुओं को जीतने वाला महावीर ।

७. ईमानदार, सत्यशील, दृढ़ संकल्पी, उद्यमशील एवं धैर्यवान कवित्त सदैव स्वयं को हल्का व तनाव मुक्त अनुभव करता है।

८. ब्रह्मचर्य परम ब्रह्म का भोग है आत्म सुख का योग है संसार का वियोग है, सिद्धत्व का नियोग है।

९. किसी पर कुदृष्टि रखना, मन में कुविचार रखना, जिह्वा से दुर्वचन बोलना, काय से प्रमाद युक्त चर्या करना, धन आदि किसी भी वस्तु का दुरुपयोग करना पाप है ।

१०.विकट समस्याओं का आसान हल निकालना बड़ा कठिन कार्य है, किन्तु पवित्रात्माओं के लिए यह भी आसान है ।

११. सरलता व सहजता में विश्व का श्रेष्ठतम सौंदर्य समाया हुआ है, जो जितना अधिक सरल, सहज व प्राकृतिक है वह उतना ही अधिक सत्य के, स्वात्मा के एवं विश्व के समग वैभव व शक्तियों के समीप है ।

१२. धन का, भोजन का, शास्त्रों का, औषधि का, कन्याओं का, गायों का,पृथ्वी का या अन्य वस्तुओं का दान देने वाले निःसंदेह विश्व में आज भी बहुत हैं, किन्तु निःस्वार्थ भावना से प्राणी मात्र के लिए स्नेह, प्रेम, दया, करुणा या अभय का दान देने वाले संसार में कितने पुरुष हैं अर्थात् अत्यंत बिरले ।

१३. यदि कोई व्यक्ति अकारण आपसे कुपित हो रहा है तो आप उस पर दया दृष्टि रखिए उस पर कुपित होकर अपने व्यक्तित्व को न गिराइये सोचिये – "यह आपके धर्म की परीक्षा देने की घड़ी है ।"

१४. महापुरुष अपने निंदक व अपमान कर्ताओं के प्रति भी शुभकामनाओं व प्रेम की वर्षा ही करते हैं ।

१५. सरलता, विनम्रता, पवित्रता, सत्यता एवं यथार्थ समर्पण पूज्य पुरुषों से भी स्नेह प्राप्त करने के साधन हैं ।

१६. संसार के प्राणियों से किया गया प्रेम वासना का कारण बन सकता है किन्तु परमात्मा से किया गया प्रेम उपासना रूप ही होता है ।

१७. दूसरे व्यक्ति की कमजोरी को अपने मन में धारण करने से वह कमजोरी आपकी कमजोरी बन सकती है ।

१८. पूर्व पुण्योदय से वर्तमान में हमें जो शक्ति, या साधन मिले हैं क्या हम उनका सदुपयोग कर रहे है यदि नहीं तो उनका दुरुपयोग क्या हमारे पतन का कारण नहीं बन जायेगा ।

१९. प्रभु परमात्मा को अपना सच्चा साथी बना लो फिर आपके जीवन में बैर, कलह, भय, चिंता, अवसाद व पश्चाताप को स्थान न मिले सकेगा ।

२०. पवित्र हृदय से प्रेम के साथ बोला गया एक शब्द भी अनेक दुःखी आत्माओं को शान्ति प्रदान कर सकता है ।

२१. निःस्वार्थ भावना, प्रेम पूर्वक व्यवहार एवं पवित्र विचारों से युक्त हो उचित समय पर दिया गया सही ज्ञान गलत फहमी(भ्रमरोग) को दूर करने में समर्थ हो सकता है ।

२२. मिष्ट प्रवचन बोलने से तालु, कंठ, जिह्वा व होठों को कम परिश्रम करना पड़ता है मस्तिष्क व नेत्रों को भी कष्ट नहीं होता है, अतः प्रज्ञ पुरुषों को मिष्ट वचन ही बोलने चाहिए ।

२३. पैर फिसलने पर आयी चोट का घाव तो जल्दी भर सकता है जिह्वा के फिसलने पर हृदय पर हुए जख्म का भरना सहज/ आसान नहीं है ।

२४. सुन्दर, गुणी, धनवान एवं शक्ति शाली व्यक्ति के सहायक बहुत मिल सकते हैं, किन्तु कुरूप, निर्गुणी, निर्धन तथा निर्बलो के सहायक मिलना दुर्लभ है ।

२५. जो व्यक्ति दूसरों की सद्सफलता के प्रति उत्साह नहीं दिखाता तब संभव है उसे भी सफल होने पर उत्साह वर्द्धन करने वाले न मिलें ।

२६. आपका पूर्व बद्ध कर्म तथा वर्तमान कालीन योग की प्रवृत्ति आपके सुख व दुःख की हेतु है ।

२७. जिसके जीवन में गुरू नहीं उसका जीवन शुरू नहीं।

२८. आदर - सम्मान, विनय पूजा, भक्ति, सत्कार व प्रेम भाव प्राप्त करने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि आप दूसरों को भी आदर - सम्मान, विनय, पूजा, भक्ति, सत्कार व प्रेम भाव देना प्रारंभ कर दें ।

२९. आप की लोभ प्रवृत्ति मात्र आपके लिए ही नहीं अनेक प्राणियों के लिए भी दुःखों की हेतु है अतः उचित तो यही है कि आप अपनी लोभ प्रवृत्ति छोड़ दें ।

३०. आत्म नियंत्रण से रहित व्यक्ति कितना भी धनी व गुणी हो, एक दिन उसे पश्चाताप करना ही पड़ेगा ।

३१. किसी के साथ प्रतिस्पर्धा करने के बजाय उसे सहयोग देना अधिक श्रेष्ठ है ।

३२. सदैव विनम्रता, सरलता व सहजता की पोषाक पहने रहिये, इस से स्वतः ही आपको प्रेम अवश्य प्राप्त होगा ।

३३. स्वयं एक समस्या बनने के बजाय हमें दूसरों की समस्यायें हल करने में सहायक बनना चाहिए, तभी हमारा जीवन सार्थक होगा तथा हम सबके प्रेम भाजक व लोक प्रिय बन सकते हैं ।

३४. दूसरों को बदलने का प्रयत्न करने से बेहतर यह होगा कि खुद को ही बदल लें ।

३५. जब हमें अपने पूर्वकृत कर्मों का फल भोगना ही है तब हमें समता से क्यों नहीं भोग लेना चाहिए ।

३६. प्रत्येक प्राणी के विचार व स्वभाव भिन्न - भिन्न हो सकते हैं किन्तु प्रेम नहीं ।

३७. यदि आप किसी के क्रोध की अग्नि को अपनी क्षमा के शीतल जल से बुझा देते हैं तब तो निःसंदेह ही आप महान हैं ।

३८. जिस चर्चा वार्ता के सुनने से आपका धर्म ध्यान छूटे, शांति, सुख, चैन में भंग पड़े/नष्ट हो अथवा दुःख, संक्लेशता बढ़े उस चर्चा वार्ता का न सुनना ही आत्म हित है ।

३९. जो व्यक्ति प्रत्येक कार्य को निष्ठा, विवेक, धैर्य, लगन तथा निस्वार्थ भावना से करता है उसे पश्चाताप नहीं करना पड़ता ।

४०. यदि आप अस्वस्थ हैं तो धैर्य धारण करो, मनोबल को वृद्धिंगत करो, मन को स्वस्थ्य रखो, सदैव मुस्कराते रहो ।

४१. क्रोधी, मानी, छलकपटी व लोभी व्यक्ति जब स्वयं के व प्रभु के प्रति भी पूर्ण न्यायी नहीं हो सकता तब तुम्हारे प्रति क्या होगा ?

४२. भविष्य में आने वाले संभावित संकटों व संघर्षो से वर्तमान में विचलित होकर कर्तव्य

विहीन मत बनो ।

४३. गुलाब काँटो के बीच भी सुरक्षित है, सुरभित है व सौंदर्य युक्त है, सर्व प्रशंसनीय है तथा पुष्प राज है । आप अपने लिए इस से क्या शिक्षा लेंगे ।

४४. अच्छी संगति से आगे बढ़ने की प्रेरणा व अंतरंग शक्ति प्राप्त होती है, इतना ही नहीं बहिरंग प्रतिकूलताओं में भी कमी आती है ।

४५. यदि आपने अपना जीवन महत्वपूर्ण बना लिया है और आप अपने समय (जीवन) का उचित सम्मान करते हैं तब यह निश्चित है कि दूसरे भी आप को महत्व देंगे व सम्मान देंगे ।

४६. अति महत्वाकांक्षा व्यक्ति को अनुशासन हीन बनाती है यह खूंखार शेर या तट विहीन नदी की तरह स्व पर ध्वंसक भी हो सकती है ।

४७. किसी भी व्यक्ति को संकट में फँसे हुए देखकर हँसना या खुश होना तुम्हारी अज्ञानता, कुटिलता, दुष्टाशय का प्रतीक तो है ही, साथ ही भविष्य में तुम्हारी पीड़ा का हेतु भी है।

४८. यदि आप शांति चाहते हैं और शांति के समर्थक है तो आप शांति से क्यों नहीं बैठते, चीखने - चिल्लाने की क्या आवश्यकता है? अपने अशुभ कर्मोदय का फल शांति से भोगे ?

४९. कभी - कभी व्यक्ति ईर्ष्या वश दूसरों को गिराना चाहता है किन्तु ऐसा परिणाम व क्रिया करके वह खुद ही गिर जाता है।

५०. सम्मान माँगने से नहीं दूसरों का पवित्र हृदय से एवं सम्मानीय कार्य करने से सम्मान स्वतः मिलता है।

५१. मानसिक नियंत्रण में कमी आने पर ही युद्ध की भूमिका तैयार होती है,आत्मशांति के इच्छुक को चाहिए कि वह मानसिक नियंत्रण व मनोबल को कभी शिथिल न होने दे ।

५२. यदि आप सदैव केवल अपना ही ध्यान रखेंगे तो दूसरे भी आप का ध्यान रखना कम कर देंगे ।

५३. अस्त्र - शस्त्र कभी खतरनाक नहीं होते, खराब होती है हमारी मानसिक दशा, जो अस्त्र - शस्त्रों के द्वारा तन व वचन से प्रकट की जाती है ।

५४. ठंडे पानी की पट्टी रखने से बुखार (ताप कम) कम हो जाता है वैसे ही क्षमा की शीतल पट्टी से क्रोध का ताप कम हो जाता है ।

५५. गुण ग्राहक दृष्टि सदैव आनंद की सृजक होती है किन्तु पर दोषान्वेषक दृष्टि संक्लेशता की ही जननी होती है ।

५६. सबसे बड़ा प्राणी सेवक वही है जो अपने अंतरंग के आनंद को, दूसरों के अंतरंग आनंद के प्रकट करने में हेतु बनाये ।

५७. सबसे ज्यादा परेशान वही है जिसे अपनी पराजय का भय है या किसी कारणवश समर्थ होते हुए भी अपनी पराजय का मुँह देख चुका है ।

५८. यदि आप अपने विचारों को संतुलित कर लें तो आप का जीवन संतुलित हो सकता है ।

५९. दूसरों के अत्याचारों, उपसर्गों, प्रतिकूलताओं व गलतियों को सहन करना एक बात है किन्तु उन्हें विशुद्ध अंतरंग से क्षमा कर देना दूसरी बात है । पहली बात तक तो कोई भी पहुँच सकता है किन्तु दूसरी बात को जीवन में धारण करने वाला महापुरुष या महात्मा ही होता है ।

६०. विरागी, आत्मसंयमी, शांत स्वभाव वाले तत्त्वज्ञानी व आत्म ध्यानी को मूर्ख बनाना असंभव है ।

६१. निःसंदेह धोखा खाना बहुत बुरा है किन्तु ये भी मत भूलों दूसरों को धोखा देना उससे भी बुरा है ।

६२. मूर्ख व्यक्ति वहीं है जो कभी संतुष्ट न हो और बुद्धिमान व्यक्ति वही है जो असंतुष्ट नहीं हो ।

६३. सहयोगी बनने का आशय उसका गुलाम बनना नहीं है किन्तु उसे हताश, निराश व

उदास देखकर सफलता की आशान्वित दशा है ।

६४. आत्म शांति को बाहर खोजना व्यर्थ है वह तो आपके नेत्रों की तरह आपके ही पास/ आपके चेहरे में है उसी तरह आपकी शांति आपके अंदर गहरे में है ।

६५. जो भी कार्य करो पवित्र हृदय पूर्ण निष्ठा के साथ करो सफलता अवश्य मिलेगी ।

६६. अपने दोष और दूसरों के गुण देखने से व्यक्ति दोष रिक्त व गुण युक्त बन जाता है ।

६७. हर परिस्थिति में पूज्य पुरुषों को सम्मान देते रहें, तब आपके मन में शिकायत का भाव नहीं ठहरेगा ।

६८. कभी - कभी अच्छे कार्य करने वालों को प्रोत्साहन देना भी सबसे बड़ा योगदान कहलाता है ।

६९. मनोबल की जगह धनबल प्रयोग करने से कोई लाभ नहीं हो सकेगा अतः जहाँ जिस चीज का प्रयोग आवश्यक है उसी का प्रयोग करो ।

७०. हर चीज का यथार्थ ज्ञान अनुमान से नहीं हो सकता कभी - कभी अनुभव ज्ञान भी आवश्यक है ।

७१. यदि कोई व्यक्ति आपको देखकर हँसे तो क्रोधित व खेद खिन्न होने की आवश्यकता नहीं अपितु यह सोच कर प्रसन्न रहें कि आप किसी की प्रसन्नता (हँसी) में निमित्त तो बने ।

७२. जब आपके अंदर क्रोध की अग्नि जलेगी तब उसका धुआँ भी आपकी आँखों को लगेगा दूसरों को लगे या नहीं लगें ।

७३. यदि आप प्रसन्न चित्त रहना चाहते हैं तो दूसरों के गुणों का या अच्छाईयों का चिन्तवन करो ।

७४. ब्रह्म मुहूर्त में किया गया प्रभु स्मरण - सुमरण (समाधि) का कारण तो है ही साथ ही दिन भर मंगल परिणामों का भी हेतु है ।

७५. स्वतंत्रता के नियमों व कर्त्तव्यों का निष्ठा के साथ पालन करने वाला ही स्वतंत्र है मात्र अधिकारों का प्रयोग करने वाला तो स्वच्छंद ही है स्वतंत्र नहीं ।

७६. स्वयं का बचाव करने के लिए किसी निर्दोष पर दोषारोपण मत करो क्योंकि समय आने पर वह सत्य प्रकट होगा ही होगा ।

७७. जिसको अपनी प्रशंसा सुखकर लगती है उसे अपनी निंदा भी दुःखद लगेगी, जो प्रशंसा पचा सकता है वही निंदा में समभाव रख सकता है ।

७८. शांति का अर्थ मात्र वचन का होना ही नहीं, अंतरंग परिणामों का निर्मल होना भी है ।

७९. परमात्मा में अनन्त शक्ति है अगर आपके मन में कोई बोझ है तो उसे परमात्मा के चरणों में सौंप दो । सच्चा भक्त ही अपने चित्त के भले बुरे विचारों को परमात्मा के चरणों में सौंप सकता है, हर कोई नहीं ।

८०. चित्त की प्रसन्नता से बढ़कर कोई पौष्टिक आहार नहीं है संक्लेशता व क्षुभित चित्त से किया गया पौष्टिक आहार पौष्टिक नहीं हो सकता ।

८१. जिस कार्य को करने से बुद्धि भ्रष्ट होती है मन का संतुलन बिगड़ता है उस कार्य को मत करो ।

८२. जिसके जीवन में निःशंकित सत् श्रद्धा नहीं वह आत्म शांति को उपलब्ध नहीं हो सकता, चित्त शांति के बिना सुख कहाँ।

८३. शायद अभी तक तो आप स्वयं के लिए व दूसरों के लिए समस्या रूप बनकर रहे हो, अब समाधान बनने का प्रयत्न कीजिए ।

८४. आत्म शांति का अनुभव करने का प्रयत्न कीजिये यदि यह आपको प्राप्त हो गई तो अन्य कुछ प्राप्त करने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी ।

८५. अज्ञानता, अविश्वास एवं असंयम (कदाचार) के अंधकार में पड़ा हुआ व्यक्ति भय, पीड़ा व चिंताओं से मुक्त नहीं हो सकता ।

८६. जो संतुष्ट है, वही सदा हर्षित व आनन्दित रह सकता है, वही सभी को प्रिय भी होता है।

८७. चित्त के शांत होने पर बड़ी - बड़ी समस्याओं का भी समाधान निकल आता है, गर्म लोहे को ठण्डा भी लोहा ही करता है।

८८. चिन्ता ग्रस्त एवं असहिष्णु व्यक्ति मृत्यु के पहले भावों से कई बार मरता है ।

८९. कषायों की मन्दता व विषय - वासनाओं से विपरीत मनुष्य की आध्यात्मिक शक्तियों को कार्य क्षमता की वृद्धिंगत करती है।

९०. कभी - कभी आराम रूपी औषधि से शरीर स्वस्थ हो जाता है उसी प्रकार मन को भी अनावश्यक दौड़ लगाने से रोको, तब निःसंदेह चित्त में शांति व आरोग्यता की उपलब्धि होगी ।

९१. विषय - कषायों से आत्मा की शक्ति क्षीण होती है, धर्मध्यान व शुक्ल ध्यान से वृद्धि को प्राप्त होती है ।

९२. आर्तध्यान और रौद्रध्यान आत्मा रूपी लोहे को जंग की तरह लग कर नष्ट करती है ।

९३. जीवन में नैतिक मानवीय, आध्यात्मिक मूल्यों की सम्यक् स्थापना किये बिना यथार्थ आनंद स्वरूप को प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

९४. संसार में सबसे महान दो चिकित्सक है १ परमात्म भक्ति २ समय ।

९५. अगर शुभाशीष और वरदान प्राप्त करना चाहते हो तो पुण्यात्मा बनो ।

९६. जैसा लक्ष्य बनाओगे वैसा लक्ष्य पाओगे ।

९७. ईमानदार व्यक्ति स्वयं भी संतुष्ट रहता है अन्य भी ।

९८. अनावश्यक सोच से मानसिक शांति भंग होती है ।

९९. सत्य का सूर्य असत्य के घन श्याम/ श्याम मेघों से क्षण भर के लिए भले ही ढक जाये किन्तु वह कभी नष्ट नहीं होता ।

१००. यदि मैं अपने पुरुषार्थ का फल पाने के लिए बैचेन हूँ तो इसका आशय है कि स्वकृत के कच्चे फल खाना चाहता हूँ ।

समाप्त

पुण्यार्जक श्रावक

आर. के .जैन

बिजनौर उ.प्र.

के सौजन्य से

१००० प्रतियां

प्रकाशित

पुण्यार्जक श्रावक

राकेश जैन

(बैंक बाले) सिरसागंज

फिरोजाबाद उ.प्र.

के सौजन्य से

२००० प्रतियां

प्रकाशित